NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

फरवरी के मुख्य खेती–बाड़ी कार्य: फसलोत्पादन

डॉ0 हरिकेश एवं लोकेश यादव

गेहूँ

- बोआई के समय के हिसाब से दूसरी सिंचाई बोआई के 40–45 दिन बाद तथा तीसरी सिंचाई 60–65 दिन की आवस्था में कर दें। चौथी सिंचाई बोआई के 80–85 दिन बाद बाली निकलते समय करें।
- अनावृत कण्डुवे की रोगी बाली, जो खेत में जल्दी निकल आती है, दिखाई देते ही उसे निकाल कर जला दें।
- गेहूँ के खेत में चूहों का प्रकोप होने पर जिंक फास्फाइड से बने चारे अथवा एल्यूमिनियम फास्फाइड की टिकिया का प्रयोग करें। चूहों की रोकथाम के लिए सामूहिक प्रयास अधिक सफल होगा।

जौ

- जौ में यदि तीन सिंचाई उपलब्ध हो तो दूसरी सिंचाई बोआई के 55–60 दिन बाद गांठ बनने की अवस्था में और तीसरी सिंचाई दुधियावस्था में बोआई के 95–100 दिन बाद करें।
- जौ की फसल में निराई–गुड़ाई का अच्छा प्रभाव होता है।
- खेत में यदि कण्डुवा रोग से ग्रस्त बाली दिखाई दे तो उसे निकाल कर जला दें।

चना

- चने की फसल को फली छेदक कीट से बचाव के लिए फली बनना शुरू होते ही फ्यूनालरेट 20 प्रतिशत ई.सी 1 लीटर अथवा क्यूनलफॉस 25 प्रतिशत ई.सी 2 लीटर 500–600 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर 2 बार छिड़काव करें।
- चने की फसल में झुलसा रोग के रोकथाम के लिए जिंक मैग्नीज कार्बामेट 2.0 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

मटर

- मटर में बुकनी रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) रोग की रोकथाम के लिए प्रति हेक्टेयर 2.

डॉ हरिकेश 'सहा. प्राध्यापक, सस्य विज्ञान विभाग, आषा भगवान बख्ष सिंह महाविद्यालय, पूरा बाजार, अयोध्या

लोकेश यादव शोध छात्र, सब्जी विज्ञान विभाग, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या

किग्रा घुलनशील गन्धक 80 प्रतिशत या ट्राइडोमार्फ 80% ई.सी 500 मिलीलीटर पानी में घोलकर 12–14 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

राई

- माहू कीट की रोकथाम के लिए प्रति हेक्टेयर मिथाइल–ओ डिमेटान 25 ई.सी. 1.00 लीटर या डायमेटवाट 30 प्रतिशत ई.सी. 1 लीटर प्रति हेक्टेयर अथवा मोनोक्रोटोफॉस 36 प्रतिशत एस.एल 500 मिली. 600–750 लीटर पानी में घोलकर प्रयोग करना चाहिए।

मक्का

- रबी कीट की रोकथाम के सिंचाई, बोआई के 75–80 दिन पर तथा चौथी सिंचाई 105–110 दिन बाद कर दें।
- बसन्तकालीन मक्का की बोआई पूरे माह की जा सकती है।
- प्रति हेक्टेयर बोआई के लिए संकर प्रजातियो के लिए 20 किग्रा व संकुल प्रजातियो के लिए 22–25 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।
- बोआई 60×20 सेमी की दूरी पर करें।
- प्रति हेक्टेयर 80 किग्रा फास्फेट तथा 40 किग्रा पोटाश में नाइट्रोजन की आधी मात्रा व फास्फेट एवं पोटाश की मात्रा बोआई के समय प्रयोग करना चहिए।

गन्ना

- शरदकालीन गन्ने में बोआई के 110–120 दिन बाद नाइट्रोजन की शेष मात्रा (60–75 किग्रा0 प्रति हेक्टेयर) की टाप ड्रसिंग कर दें।
- बसन्त कालीन गन्ने की बुवाई देर से काटे गये धान वाले खेत में और तोरिया/मटर/आलू की फसल से खाली हुये खेत में की जा सकती है।
- गन्ने के मध्यम एवं देर से पकने वाली प्रमुख किस्में हैं– को.शा. 767, को.शा. 97261 एवं को.शा. 95422 जल्दी तैयार होने वाली किस्में हैं– को.शा. 8436, को. शा. 88230 व को.शा. 9525। जल–निकास की समस्या वाले क्षेत्रों के लिये यू.पी. 9530 व को.से. 96436 अच्छी किस्में हैं।
- एक हैक्टेयर बुवाई कि लिये 60–70 कुन्तल गन्ना प्रयाप्त होता है।
- गन्ना का बीज जिस खेत में लेना हो, बोआई से 2 सप्ताह पूर्व उसकी सिंचाई कर दें।

- उपचारित बीज की बुवाई 75–90 सेमी. की दूरी पर कतारों में 10 सेमी. की गहराई में करें।
- उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करें। यदि परीक्षण की सुविधा उपलब्ध न हो, तो बोआई से पूर्व प्रति हेक्टेयर 60–75 किग्रा. नाइट्रोजन 80 किग्रा. फास्फेट व 60 किग्रा. पोटाश का प्रयोग करें।
- फसल को दीमक से बचाने के लिये क्लोरोपाइरीफास 20 प्रतिशत ई.सी. 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर 800–1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
- गन्ने के दो कतारों के बीच उर्द या मूँग की दो कतारें अथवा भिण्डी या लोबिया की एक कतार की बोआई की जा सकती है।
- गन्ने की पेड़ी से अच्छी उपज प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि खेत से खरपतवार निकाल दें और सिंचाई करें तथा मिट्टी में ओट आने पर 90 किग्रा. नाइट्रोजन (195 किग्रा. यूरिया) की पहली टाप ड्रेसिंग करें और कल्टीवेटर से गुड़ाई करके उर्वरक को मिट्टी में मिला दें।

हरा चारा

- बरसीम में कटाई 20–25 दिन के अन्तराल में करें।
- बरसीम व जई में 20–25 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें।
- जई में पहली कटाई, बोआई के 55 दिन बाद करें और कटाई के बाद सिंचाई करके प्रति हेक्टेयर 20 किग्रा. नाइट्रोजन की दूसरी टाप ड्रेसिंग कर दें।
- गर्मी में चारे के लिए मक्का, चरी और लोबिया की बुवाई माह के दूसरे पकवाड़े से प्रारम्भ की जा सकती है।

सब्जियों की खेती

- आलू व टमाटर की फसल को झुलसा रोग से बचाने के लिये मेकोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 2 किग्रा. प्रति हेक्टेयर 600–800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए।
- लाक कटे आलू के छिलके मजबूत हो जाने पर खुदाई करके छाया में ढेर लगाकर सुखा दें।

- टमाटर की ग्रीष्म कालीन फसल में रोपाई के 25–30 दिन बाद उन्नत किस्मों में प्रति हेक्टेयर में 40 किग्रा. नाइट्रोजन (80 किग्रा. यूरिया) संकर/असीमित बड़वार वाली किस्मों के लिये 55–60 किग्रा. नाइट्रोजन (120–130 किग्रा.) यूरिया की प्रथम टाप ड्रेसिंग कर दें।
- प्याज में प्रति हेक्टेयर नाइट्रोजन की सम्पूर्ण 100 किग्रा. मात्रा का 1/3 भाग (72 किग्रा. यूरिया) रोपाई के 30 दिन बाद सिंचाई का टाप ड्रेसिंग करें।
- प्याज की पर्पिल ब्लाच से बचाने के लिए मैकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू. पी. और यदि थ्रिप्स कीट लगे हो तो मिथायल–ओ–डिमेटान 25 प्रतिशत प्रति हेक्टेयर की दर से 600–800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- लहसुन में यदि नाइट्रोजन की दूसरी टाप ड्रेसिंग न की हो तो यूरिया की 75 किग्रा मात्रा बोआई के 60 दिन बाद डालकर सिंचाई करें। रोग एवं कीट से बचाव के लिए एक सुरक्षात्माक छिड़काव मैकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. 2 किग्रा प्रति हेक्टेयर अथवा मिथाइल–ओ–डिमेटान 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर 600–800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- फ्रेन्चबीन (राजमा) में फलियाँ बनते समय दूसरी सिंचाई कर दें। फिर आवश्यकतानुसार भूमि में नमी की मात्रा कम होने पर (50 प्रतिशत से) हल्की सिंचाई करें।
- सब्जियो के लिए खेत तैयार करते समय प्रति हेक्टेयर 250–300 कु. गोबर/कम्पोस्ट खाद या 70–80 कु. नादेप कम्पोस्ट खाद या 70–80 कु. नापेद कम्पोस्ट डालकर मिला दें।
- लोबिया की बोआई के लिए इस समय पूसा दो फसली, लोबिया 263 व पूसा फागुनी उपयुक्त किस्में हैं।
- लोबिया को 40–45X10–15 सेंमी की दूरी पर बोआई करने पर प्रति हेक्टेयर 20–25 किग्रा बीज की आवश्कता होगी।
- लोबिया की अच्छी फसल के लिए 40 किग्रा नाइट्रोजन, 50–60 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर आवश्यक होगा। नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा बीज बोने से पहले या बोआई के समय दें।
- भिण्डी की बोआई 30–45 सेंमी दूर कतारो में 20–30 सेंमी की दूरी पर करें। बोआई के लिए प्रति हेक्टेयर 18–20 किग्रा बीज की आवश्यकता होगी।

- बोआई से पूर्व भिण्डी के बीज को 24 घण्टे पानी में भिगो देना चाहिए।
- भिण्डी के प्रति हेक्टेयर के लिए 100–120 किग्रा. नाइट्रोजन, 50 किग्रा. फास्फेट व 50 किग्रा फास्फेट व 50 किग्रा पोटाश की आवश्यकता होती है। बोआई के समय फास्फोरस व पोटाश की सम्पूर्ण मात्राा तथा नाइट्रोजन 1/3 भाग प्रयोग करें।
- ग्रीष्म काल में चौलाई की बुवाई प्रति हेक्टेयर 2–3 किग्रा बीज रेत में मिलाकर छिटकवां या 20–25 सेमी. दूर कतरों में करें।
- चौलाई में प्रति हेक्टेयर 50 किग्रा नाइट्रोजन, 50 किग्रा फास्फेट व 30 किग्रा पोटाश बोआई के समय प्रयोग करें।
- लौकी की बुवाई 3–4 X .75 मी. पर कर सकते हैं जिसके लिए प्रति हेक्टेयर 4–5 बीज आवश्यक होता है। बोआई 80–100 सेमी. चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेंड़ों पर दो बीज प्रति स्थान करें।
- खीरा की बोआई 15.5–2 X 0.50–0.60 मीटर पर 30 सेमी. चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेड़ों पर करें। इसके लिए प्रति हेक्टेयर 2–2.5 किग्रा. बीज प्रयोग करना चाहिए।
- खरबूजा की बोवाई 1.5–2 X 0.50–0.60 मीटर पर 30 सेमी. चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेड़ों पर 2–3 किग्रा प्रति हेक्टेयर बीजदर से करें।
- तरबूज की बोवाई 2.5–3 X 0.60 मीटर पर 40 सेमी. चौड़ी नाली की दोनों मेड़ों पर करते हैं। इसके लिए प्रति हेक्टेयर 4–5 किग्रा. बीज लगता है।
- चिकनी तोरी, आरा तोरी व करेला की बोआई 40 सेमी. चौड़ी नाली की दोनों मेंड़ों पर 2.5–3 X 0.60 मीटर की दूरी पर करनी चाहिए। इनके लिए प्रति हेक्टेयर 4–5 किग्रा. बीज आवश्यक होता है।
- कुम्हड़ा की बोआई 3–4 X 0.75 मीटर की दूरी पर 80–100 सेमी. चौड़ी नाली की दोनों मेंड़ों पर करते हैं। इसके लिए प्रति हेक्टेयर 4–6 किग्रा बीज आवश्यक होगा।
- कतार से कतार 2 मीटर की दूरी पर 30–40 सेमी. चौड़ी नाली बनाकर उसकी दोनों मेड़ों पर 30–45 सेमी. की दूरी पर

टिण्डा व ककड़ी के बीज की बोआई करते हैं। टिण्डा के लिए प्रति हेक्टेयर 5–6 किग्रा. व ककड़ी के लिए 2–3 किग्रा. बीज की आवश्यकता होती है।

- कद्दू वर्गीय सब्जियों की बोआई से पूर्व प्रति हेक्टेयर 16–17 किग्रा नाइट्रोजन, 25 किग्रा फास्फेट व 25 किग्रा पोटाश आपस में मिलाकर बोने वाली नालियों के स्थान पर डालकर मिट्टी में मिला दें।
- कद्दू वर्गीय के सब्जियों की बोआई के लिए नाली की गहराई 15–20 सेमी. रखनी चाहिए।

बागवानी

- फल वृक्षों में उर्वरक देने के लिए अच्छा होगा कि वृक्ष के तने के छत के नीचे किनारों तक डालकर जमीन में 10–15 सेमी. मिलाकर सिंचाई कर दें।
- सिंचाई की सुविधा हाने पर आम, अमरूद, आंवला, कटहल, लीची व पपीता के बाग का रोपण करें।
- अमरूद एवं ऑवला के नये बाग में अन्तरासस्य के रूप में टमाटर, भिण्डी, मिर्च व लाबिया की बोआई करें।
- आम में खर्रा रोग (पाउडरी मिल्ड्यू) से बचाव के लिए माह के प्रथम पक्ष घुलनशील गन्धक 80 प्रतिशत 2 ग्राम अथवा हेक्साकोनाजोल 5 प्रतिशत ई.सी. 1 मिली. अथवा डायनोकैप 48 प्रतिशत ई. सी. 1 मिली. प्रति लीटर पानी में घोलकर किसी एक रसायन का छिड़काव करें।
- आम में भुनगा कीट के रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एल.एल. 21 मिली/3 लीटर पानी अथवा क्यूनाफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. 2 मिली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

वानिकी

- पापलर के वृक्ष लगाने का समय है। रोपाई 5 x 4 मीटर पर करें।
- इसमें 3–4 वर्षों तक खरीफ और रवी दोनों मौसम में फसलें उगाई जा सकती हैं। आगे चलकर केवल रवी में फसल उगानी चाहिए।

पुष्प व सगन्ध पौधे

- गुलाब में सूखे फूलों व आवश्यक अंकुरों को तोड़ दें।
- बसन्तकलीन बहार के लिये घुली हुई खाद देना चाहिये। आवश्यकता अनुसार निराई व गुड़ाई करते रहें।
- ग्लैडियोलस की मुरझाई टहनियों को निकाल दें तथा स्पाइक का विपणन करें।

- रजनीगन्धा के बल्बों के रोपण से 10–15 दिन पूर्व क्यारियों में प्रति वर्ग मीटर 10 किग्रा. गोबर व कम्पोस्ट खाद, 100 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 80–100 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश की बेसल ड्रेसिंग करें।
- गुलदावदी के सकर्स को अलग करके गमलों में लगा दें।
- गर्मी के फूलों जैसे– जीनिया, सनफ्लावर, पोर्चुलाका व कोचिया के बीजों को नर्सरी में बोयें।
- मेंथा में 10–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई करें तथा बोआई के 30 दिन बाद निराई–गुड़ाई कर दें।

पशुपालन/दुग्ध विकास

- पशुओं को निर्धारित मात्रा में दाना तथा मिनरल मिक्चर अवश्य दें।
- खुरपका–मुँहपका का टीका अवश्य लगवायें (यदि अभी तक न लगवाया हो)।
- वाह्य परजीवी तथा अन्तः परजीवी की दवा (सुई) लगवायें।
- बरसीम भूसे के साथ मिलाकर दें।
- पशुओं को ठंड से बचायें तथ ताजा एवं स्वच्छ पानी पीने को दें।

मुर्गी पालन

- मुर्गी गृह में प्रकाश एवं गर्मी की प्रयाप्त व्यवस्था करें।
- मुर्गियों को कृमिनाशक दवा दें।
- मुर्गियों को अतिरिक्त ऊर्जा हेतु दाना दें।
- लीटर को सूखा रखें तथा स्वच्छ पानी सदैव उपलब्ध रखें।